गंगा दशहरा व्रत कथा (Ganga Dussehra Vrat Katha)

गंगा दशहरा (Ganga Dussehra), जिसे गंगा अवतरण के नाम से भी जाना जाता है, हिन्दू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार शुक्ल पक्ष के दसवें दिन, ज्येष्ठ मास में मनाया जाता है। इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी की पवित्रता को मनाना है, जिसे मान्यता है कि यह पृथ्वी और उसके सभी प्राणियों को शुद्ध करती है।

गंगा दशहरा (Ganga Dussehra) की कथा हिन्दू पुराणों में वर्णित है। मान्यता है कि सूर्यवंशी राजा सगर ने अपनी प्रभुत्व की स्थापना करने के लिए अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। इसके बावजूद, देवताओं के राजा इंद्र ने डर के मारे यज्ञीय अश्व को चुरा लिया और ऋषि कपिल के आश्रम में छुपा दिया। जब सगर के पुत्रों ने अश्व की खोज की, तो उन्होंने कपिल को चोर समझा और उन्हें हमला कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए, सगर के वंशजों ने, उनके प्रपोते भगीरथ सहित, देवताओं को प्रसन्न करने और गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए कठोर तपस्या की। कई वर्षों की ध्यानयोग के बाद, भगीरथ को अंततः ब्रह्मा जी से वरदान मिला, जिसमें उन्होंने वादा किया कि गंगा पृथ्वी पर उतरेगी और सगर के पुत्रों की आत्माओं को शुद्ध करेगी। लेकिन गंगा की उतराई इतनी शक्तिशाली थी कि यह पृथ्वी को नष्ट कर सकती थी, इसलिए ब्रह्मा जी ने भगीरथ को भगवान शिव की मदद मांगने की सलाह दी, जिनके पास गंगा की धारा को नियंत्रित करने की शक्ति थी। भगीरथ ने भगवान शिव (Lord Shiva) की प्रार्थना की, जिन्होंने गंगा के गिरने को अपने जटाओं से तोड़ने का संकल्प किया। भगीरथ की भक्ति से प्रसन्न होकर, भगवान शिव (Lord Shiva) ने गंगा को अपने केशों में पकड़ लिया और उसे धीरे-धीरे पृथ्वी पर छोड़ दिया, जिससे भगीरथ की इच्छा पूरी हुई। जहां गंगा पहली बार पृथ्वी को छूने आई, उसे गंगासागर कहा जाता है, और यह हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल माना जाता है।

www.janbhakti.in